

श्री जिन-स्तवन

(तर्ज - जब तुम्हीं यले परदेश)

जल यले गये भरतार-मेरे गिरनार हे मेरी सहेली,
मैं क्यों कर रहूँ अकेली. टेक
लो आभूषण नहीं भाते हैं, ये पियु बिन नहीं सुहाते हैं,
जब नव भव के साथीने दृक्षा लेली. मैं क्यों कर. १

गिरनारी में भी जाऊंगी, शिवपुरी में चित्त लगाऊंगी,
में संयम धार करूं तप से अठभेदी. मैं क्यों कर. २

जो उनके मन में भाया है, मेरे भी वही समाया है,
बूं सुलजा 'वृद्धि' उदगी कर्म पड़ेदी. मैं क्यों कर. ३